RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

विषयों को हिन्दी में पढ़ाने की व्यवस्था

Dr Sushma Garg

Assistant Professor, Hindu Kanya Mahavidyalaya Jind, Haryana

भारत देश हिंदी भाषी देश है। भारत देश की कुल जनसंख्या का 56 प्रतिशत से अधिक जनता हिंदी पढ़ना और लिखना जानती है तो उस देश में हिंदी का प्रचलन व विस्तार होना अति आवश्यक है। विश्व में मौजूद किसी भी देश की प्रगति का यदि मूल्यांकन किया जाये तो वहाँ की राष्ट्रभाषा ने ही उस देश को ऊचाँई हासिल करने में मदद की है। हमारी मातृभाषा व राजभाषा हिंदी होने के बावजूद भी भारत में अंग्रेजी भाषा का ही अधिकाधिक विस्तार हो रहा है जो कि उचित नहीं है।

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव होने के कारण आज का जनमानस जो अपनी भाषा में अच्छे तरीके से विचारों का आदान–प्रदान कर सकता है वह अंग्रेजी के कारण कहीं न कहीं बाधा और चुनौतियों में फँसा रहता है। आज के समय में हिंदी भाषा के माध्यम से युवाओं को प्रगति की राह पर लाया जा सकता है।

इस हेतु हमें हिंदी भाषा में अनुसंधानिक लेखों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देना चाहिए, मौलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करने के साथ–2 विश्व में मौजूद अलग–2 नवीनतम जानकारी को भी हिंदी में उपलब्ध करने का प्रयास किया जाए।

साहित्य के अतिरिक्त जितने भी साहित्येत्तर विषय है जैसे – विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, तकनीकी, वाणिज्य, कानून एवं व्यापार, जन–संचार व मीडिया आदि साहित्येत्तर विषयों से संबंधित 'पारिभाषिक शब्दावली' का हिंदी में यथोचित निर्माण किया जाना चाहिए। यदि विज्ञान के सभी विषयों जैसे भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र, प्राणी विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि के पारिभाषिक शब्दावली की निर्माण कर, छात्रों व शोधार्थियों को पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग करने का आह्वान किया जाए कि वे सभी अपना कार्य व शोध पत्र हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर निर्मित करें तो न केवल वे विश्व में हिंदी की भाषा का संचार व प्रसार करेगें, अपितु देश को प्रगति पथ पर लाने में भी अपना योगदान देने में सक्षम बन सकेगें।

अंततः भारत को भी 'विज्ञान' को हिंदी के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने का प्रयास मौलिक, लेखन एवं मौलिक चिंतन के माध्यम से करना चाहिए।

10वां विश्व हिंदी सम्मेलन जोकि भोपाल में हुआ था इस सम्मेलन में भी पहली बार विज्ञान क्षेत्र में, हिंदीसत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का उद्देश्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषयों को हिंदी में सरल एवं रूचिपूर्ण तरीके से जनमानस में पहुँचने के प्रयासों को प्रोत्साहित करना था। इस सम्मेलन में देश के विख्यात वैज्ञानिकों ने हिंदी में विज्ञान की उपलब्धता के संबंध में चुनौतियों और अवसरों पर विस्तार से चर्चा करते हुए विज्ञान को सरल, बोधगम्य एवं प्रभावशाली बनाने के लिए अपने विचार रखे।

- उन्होंने सुझाव दिया कि सभी प्रकार के विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी विषयों से संबंधित, पाठ्यक्रम सामग्री का, हिंदी में अनुवाद कर, हिंदी में विज्ञान संचार को प्रोत्साहन दिया जाए।
- सभी साहित्येत्तर विषयों की सामग्री के पारिभाषिक शब्दकोश के निर्माण के साथ–साथ, सभी विषयों की अंग्रेजी में उपलब्ध सामग्री का अनुवाद भी किया जाए ताकि सभी विषयों की अनुदित सामग्री के माध्यम से तकनीकी व विज्ञान के विषयों का अध्ययन व अध्यापन हिंदी भाषा में करवाना सरल हो सके।
- चिकित्सा क्षेत्र में नियामक संस्थाओं द्वारा एक निश्चित समय सीमा में, सभी चिकित्सा परीक्षाओं में हिंदी भाषा में लिखने की छूट प्राप्त हो। चिकित्सा शिक्षण द्विभाषीय माध्यम से हो।
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत केन्द्रीय हिंदी चिकित्सा प्रकोष्ठ का गठन किया जाए।
- उच्च चिकित्सा व तकनीकी शिक्षा लेखन मिशन की स्थापना की जाए तथा अवकाश प्राप्त चिकित्सकों को, शिक्षण संस्थानों में हिंदी में चिकित्सा संबंधी व्याख्यानों के लिए आमंत्रित किया जाए।
- वैज्ञानिक एवं शब्दावली आयोग, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दाबली का निर्माण एवं पारिभाषिक कोश के निर्माण का कार्य करना है। इस कार्य को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत संचालित कर, विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम को हिंदी भाषा में उपलब्ध करवाया जाए।
- हिंदी में लेखन करते हुए, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाणिकी, तकनीकी के लोकप्रिय एवं प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के यथारूप को देवनागरी लिपि में, मानक शब्दों के साथ दिए जाने की स्वीकार्यता मिले।
- हिंदी भाषा में विज्ञान विषयों पर वैज्ञानिक संस्थानों द्वारा शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन अनिवार्य किया जाए।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

– हिंदी भाषा में सभी साहित्येत्तर विषयों के लेखन के लिए जो व्यक्तिरूप तौर पर या संस्थागत रूप में प्रयास किए गए, उनका संकलन कर, वर्तमान स्थिति का आकलन कर, भविष्य में किए जाने वाले कार्यों की रूपरेखा तैयार की जाए।
– सभी वैज्ञानिक विषयों का प्रचार–प्रसार विद्यालय स्तर से ही मातृभाषा में हो।
– डिजिटल इंडिया के तहत प्राचीन भारत के वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित दुर्लभ ग्रंथों जैसे – 'भारत की संपदा' आदि साहित्य को निःशुल्क वेबसाइट पर उपलब्ध कराया जाए, इसके अलावा विज्ञान विश्वकोश का प्रकाशन हिंदी में किया जाए।
– विज्ञान एवं तकनीकी प्रयोगशालाओं द्वारा सोशल मीडिया पर हिंदी में विज्ञान सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
– हिंदी में दैनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीकी व वाणिज्य से संबंधित समाचार पत्रों का प्रकाशन आंरभ किया जाए तथा इन विषयों से संबंधित मूलभूत जानकारी हिंदी में प्रकाशित की जाए।

सभी विषयों को हिंदी में पढ़ाने हेतु विज्ञान, कंप्यूटर प्रौद्योगिकी जनसंचार आदि को डिजिटल बनाने की व्यवस्था की जाए; ताकि सभी विषय हिंदी में सुगमता से पढ़ाए जा सके।

उदाहरणस्वरूप तकनीक एवं कंप्यूटर ने हमारे बहुत से कार्यों को आसान कर दिया है। खासकर गूगल हिंदी इनपूट और माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंगवेज टूल की सहायता से अंग्रेजी की ले–आउट के जरिए, अंग्रेजी की ही गति से हिंदी में भी कंप्यूटर पर आसानी से काम किया जा सकता है। गूगल का ब्लॉगर एक ऐसी ही ई–टूल है, जिसके जरिए हम एक ऑनलाइन चौपाल लगाकर हमारे विचारों को हमारी भाषा में स्थान दे सकते है। वर्तमान समय में कंप्यूटर पर कई ब्लॉग है, जो हिंदी में है और नित–प्रतिदिन नवीन विषयों पर अपने ज्ञान का प्रसार कर रहें है। इसमें हिंदी भाषा, ज्ञान–विज्ञान, तकनीकी प्रौद्योगिकी, कथा–कहानियाँ, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल जगत तथा अन्य विषयों के साथ–साथ इतिहास, भूगोल विज्ञान जैसे कई विषयों का समावेश है। विषयों को हिंदी में पढ़ाने हेतु सभी साहित्यत्तेर विषयों से संबंधित पुस्तकें हिंदी में भी लिखी जानी चाहिए ताकि उन सभी विषयों को हिंदी माध्यम से भी पढ़ाया जा सके। हिंदी में लिखी गई बहुत–सी पुस्तकें आज भी आम जन तक नहीं पहुँच पाई है जिन्हें ब्लॉग पर दिए गए लिंक के माध्यम से सरलता से डाउॅनलोड किया जा सकता है व सोशल मीडिया पर शेयर किया जा सकता हैं और पाठकों को इसकी जानकारी लिंक द्वारा भेजी जा सकती है।

उदाहरण स्वरूप इंटरनेट पर हिंदी का पहला चिट्ठा या ब्लॉग 'नौ दो ग्यारह' माना जाता है, जिसे आलोक कुमार ने पॉस्ट किया था। ब्लॉग के लिए चिट्ठा शब्द उन्होंने ही प्रतिपादित किया था। जोकि अब इंटरनेट पर प्रचलित हो चुका है। खासकर ऐसी पुस्तकें जिनको प्रकाशित करने में समस्या आती है या फिर जो पुस्तकें प्रकाशित होने पर भी पाठकों तक नहीं पहुँच पाती है ऐसी पुस्तकों की सामग्री को आसानी से पाठकों तक मात्र, एक क्लिक करने पर ही पहुँचाया जा सकता हैं। ऐसे ब्लॉग हिंदी भाषा में विभिन्न विषयों की पढ़ाई में बड़े कारगर साबित हो रहे है। कुछ ब्लॉग के उदाहरण प्रस्तुत है जैसे – हिंदूमहासागर, राजभाषा हिंदी, प्रतिमास, विज्ञानविश्व, शब्दों का सफर, ज्ञानवाणी, गणित तथा विज्ञान, सौर इंडिया, आदि। वास्तव में आज के ब्लॉग कल की पुस्तकें है। अर्थात, कागज़ कलम लेकर अपने विचारों को लिखने के बजाए, यदि सभी विषयों से संबंधित विज्ञजन अपने–2 विचार या पाठ्यक्रम संबंधी जानकारी को सीधे कंप्यूटर पर टाईप कर देते है तो इस तरह से इलेक्ट्रॉनिक पाडुंलिपि बन जाती है। उदाहरण के लिए डॉ जाकिर अली रजनीश जी ने अपनी वैज्ञानिक सोच को 'विज्ञानविश्व' ब्लॉग के माध्यम से व्यक्त किया है जो विज्ञान में रूचि रखने वालों के पाठकों के लिए अनोखा तोहफा साबित हुआ है।

इसके अलावा 'विज्ञानविश्व' ब्लॉग ने विज्ञान की नवीनतम जानकारी को सरल हिंदी में उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया है, जिससे विज्ञान के जटिलतम सिद्धांतों को समझने में सहायता हो रही है साथ ही इससे एक वैज्ञानिक सोच विकसित हो रही है।

ठीक इसी प्रकार से डॉ श्यामगुप्त का ब्लॉग श्यामस्मृति देश की पौराणिक गाथाओं का भौगोलिक और ऐतिहासिक संदर्भ खोजने में मील का पत्थर साबित हुआ है। अतः विभिन्न विषयों से संबंधित इस तरह के ब्लॉग, सभी विषयों को हिंदी में पढ़ाने हेतु, आवश्यक भूमिका निभाने में सहायक सिद्ध हो सकते है।

रवीन्द्र प्रभात ने अपनी 'हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास' पुस्तक में ई–एजुकेशन, ई–पत्रकारिता, मल्टी मीडिया इनस्क्रिप्ट आधारित मानक हिंदी टंकण, यूजर जेनरेटेड कन्टेन्ट, शिक्षा केन्द्रित, सोशल नेटवर्किंग, एजुकेशनल गेमिंग आदि सभी तथ्यों को विस्तार से बता रखा है।

ठीक इसी प्रकार से सभी अन्य विषयों के विषय विशेषज्ञ भी अपने–अपने विषयों से संबंधित व्यावहारिक व सैद्वान्तिक जानकारी हिंदी में ब्लॉग तैयार कर डिजिटल रूप में उसे इंटरनेट पर प्रस्तुत कर सकते है।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का इसी संदर्भ में उदाहरण प्रस्तुत है। इस विश्वविद्यालयके 'हिंदी समय' ब्लॉग के माध्यम से, हिंदी की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है इसमें हिंदी के उपन्यास, कहानी, कविता, व्यंग्य, नाटक, निबंध, आलोचना, बाल साहित्य, संस्मरण, यात्रा वृतांत,

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

सिनेमा इन परंपरागत साहित्यिक विषयों के साथ–साथ अनुवाद, कोश विज्ञान, समग्र–संचयन, रचनाकारों, लेखकों, खोज, अनुसंधान संबंधी नवीनतम जानकारी भी प्राप्त होती है, इससे अध्ययन के साथ–साथ अनुसंधान को भी दिशा मिल रही हैं। इस ब्लॉग के माध्यम से इस विषय पर शोध करने वालों को एक नई उम्मीद की किरण दिखाई देने लगी है। निश्चित ही राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी ब्लॉगर एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

हमारे देश में स्नातक या स्नातकोत्तर श्रेणी में पढ़ाए जा रहे विभिन्न विषयों की पढ़ाई वर्तमान में अंग्रेजी भाषा में ही करवाई जाती है और अक्सर यहीं तर्क दिया जाता है कि विज्ञान और तकनीकी जैसे विषयों की पढ़ाई तो केवल अंग्रेजी में ही संभव है क्योंकि हमारी शिक्षा प्रणाली में यह बात प्रचलित हो चुकी है कि बहुत से विषयों की पढ़ाई तो केवल अंग्रेजी भाषा में ही संभव है। इन विषयों में अर्थशास्त्र, पर्यावरण, कंप्यूटर, वाणिज्य, प्रबंधन, प्राणी विज्ञान, जीवविज्ञान, जैवप्रौद्योगिकी, वनस्पतिशास्त्र, संख्यात्मक विश्लेषण, कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन, शोध पद्धति, पारिस्थितिकी और वनस्पति विज्ञान, प्रायोगिक प्राणीविज्ञान, नाभिकीय भौतिकी, पादप शरीर क्रिया, विज्ञान और जैव रसायन, कोशिकाविज्ञान अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन, पादप शरीर क्रिया विज्ञान और जैव रसायन, अमूर्त्त बीजगणित, अवकलन गणित, समाकलन गणित, रेखीयसिद्धधांत व्यावसायिक सांख्यिकी, लघु व्यापार प्रबंधन, वित्तीयलेखांकन, विपणनशोध प्रंबध, विज्ञान प्रंबधन, आण्विक जैविकी और जैव प्रौद्योगिकी, पारिस्थितिकी और वनस्पति विज्ञान पर्यावरण जैविकी, इसी तरह के बहुत से विषय है जिनका अध्ययन स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अंग्रेजी माध्यम से ही करवाया जाता है। इन सभी विषयों का वर्गीकरण सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में किया जा सकता है। कला संकाय, वाणिज्य संकाय व विज्ञान संकाय की विभिन्न श्रेणियों व विभिन्न भागों में बाँटकर किया जाता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में इन सभी संकायों से संबंधित विषयों की पढ़ाई अंग्रेजी भाषा में ही करवाई जाती है और कुतर्क दिया जाता है कि इन सभी विषयों से संबंधित पर्याप्त सामग्री अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध है। हिंदी भाषा में नहीं।

अतः इन सभी विषयों को हिंदी में पढ़ाने की व्यवस्था हेतु क्या–क्या प्रयत्न किए गए है और क्या–क्या हो सकते है। इस शोध पत्र में उन सब पर विस्तार से लिखने का प्रयास किया गया है।

आज का युग, विज्ञान का युग है, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है, क्योंकि वर्तमान समय जनसाधारण का समय है और जनसाधारण को विज्ञान के साथ जोड़ देने के लिए, हमें विज्ञान लेखन हेतु, हिंदी माध्यम पर बल देने की आवश्यकता है।

हिंदी भाषा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी क अपनी एक भाषा नहीं है। कुछ लेखक बड़े ही कठिन शब्दों का प्रयोग करते है, जिन्हें जन साधारण समझ नहीं पाता जिसके फलस्वरूप विज्ञान लेखन सफल नहीं हो पाता है।

इसका सरलतम उपाय यहीं है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से जुड़े अंग्रेजी के शब्दों को, हिंदी देवनागरी ने ज्यों का त्यों लिख दिया जाए, जो अंग्रेजी के वैज्ञानिक शब्द, वर्षों से प्रचलन में है और जनमानस में रच–बस गए है क्योंकि उन्हें ग्रहण करने में कठिनाई नहीं होगी।

विज्ञान परिषद की स्थापना भी 1913 में इसी उद्देश्य से की गई कि राष्ट्र भाषा हिंदी के माध्यम से, विज्ञान का प्रचार–प्रसार हो। विज्ञान परिषद ने दर्जनों लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकों का प्रकाशन किया है सन 2000 के दशक में इसने जैवप्रौद्योगिकी विभाग और सी.एस.आई.आर. के आर्थिक सहयोग के कई महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन कार्य किया। विज्ञान परिषद द्वारा सन 1958 में 'विज्ञान परिषद अनुसंधान पत्रिका' का प्रकाशन कार्य किया गया, यह हिंदी में शोधपत्र प्रकाशित करने वाली विज्ञान की पहलीमासिक पत्रिका है।

माध्यमिक और स्नातक कक्षाओं तक के विद्यार्थियों के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की पाठ्य पुस्तकें हिंदी में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है और स्नाकोत्तर कक्षाओं के लिए हिंदी में पाठ्य पुस्तकें तैयार करने की दृष्टि से 'मध्यप्रदेश हिंदीग्रंथ अकादमी' भोपाल सराहनीय कार्य कर रही है। विज्ञान एवं अन्य विषयों को हिंदी में ही जोड़ा जाए व लिखा जाए, इसके लिए वैज्ञानिकों, शोधार्थियों व साहित्यिकारों सभी को हिंदी में विज्ञान लेखन को, एक मिशन, एक आंदोलन के रूप में लेना होगा।

अनुवाद प्रकाशन योजना व हिंदीग्रंथ अकादमियों के माध्यम से अनुवाद तथा हिंदी में मौलिक लेखन योजना को बढ़ावा देना होगा परंतु विज्ञान एवं अन्य सभी अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने जाने वाले विषयों में दो समस्याएँ प्रमुख रूप से उभर कर सामने आती है कि एक पारिभाषिक शब्दावली को लेकर, दूसरे पारिभाषिक शब्दकोश को लेकर। इसे क्षेत्र में अत्यधिक कार्य करने की आवश्यकता है ताकि पारिभाषिक शब्दवली व शब्दकोश के आधार पर हिंदी में पाठ्य पुस्तकों के निर्माण में सहायता मिल सके। वैज्ञानिक एंव तकनीकी साहित्य निर्माण के कार्य में तेजी लाने हेतु निम्नलिखित प्रयास किए जाए जो कि हिंदी भाषा में अन्य विषयों को पढ़ाने हेतु सहयोगी सिद्ध हो सकते है।

- हिंदी राज्यों के सभी विश्वविद्यालय, शिक्षा का माध्यम हिंदी कर दें तो सभी प्रकाशक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों की पुस्तकें हिंदी में लिखवाने एवं प्रकाशित करने में रूचि लेंगे।
- शासन, सरकारें व हिंदी प्रतिष्ठान विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के हिंदी में प्रकाशित मानकग्रंथों पर पारितोषिक देने की व्यवस्था करें।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

– अलग–अलग विश्वविद्यालयों को अलग–अलग विषय पर लेखन कार्य दे दिया जा जाए ताकि कम समय में अधिक काम हो सके व विषय पुनरावृत्ति भी ना हो।
– हिंदी प्रांतो के सभी विश्वविद्यालय हिंदी में शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित करें। वैज्ञानिकों एवं शोध संस्थानों को अपने–अपने क्षेत्र में न केवल मौलिक ग्रंथ हिंदी में लिखने व लिखवाने हेतु प्रेरित करें अपितु अपनी 'शोध रिपोर्ट हिंदी में तैयार करने की अनुंशसा भी करें।
– हिंदी भाषा में अनुसंधानिक लेखों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देना चाहिए व मौलिक लेखन हेतु प्रोस्साहित करना चाहिए और साथ ही साथ भाषा और शब्दों की जटिलता में न अटकते हुए, अलग–2 पारिभाषिक शब्दों को, हिंदी में यथोचित प्रचलित करना चाहिए।

विज्ञान के साथ–2 यदि हम राजभाषा हिंदी के प्रयोग की बात प्रौद्योगिकी, प्रशासनिक व तकनीकी क्षेत्रों में करें तो इस विषयों से संबंधित विषयों को हिंदी में पढ़ाने हेतु वहीं चुनौतियाँ है जोकि वैज्ञानिक क्षेत्र में हमारे समक्ष है लेकिन इन सब का समाधान भी लगभग वहीं है जो वैज्ञानिक क्षेत्र के संदर्भ में दिया गया है। परंतु उपरोक्त क्षेत्रों संबंधी यदा–कदा थोड़े से अर्जित प्रयासों की आवश्यकता है ताकि हिंदी में इन विषयों को सुगमता के साथ पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा सके।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी का मूल वाहक 'कंप्यूटर' है। कंप्यूटर के बिना सूचना प्रौद्योगिकी के किसी भी रूप भी कल्पना अधूरी हो होगी। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ही समूचे विश्व में सूचनाओं के संकलन का आदान–प्रदान सहज हो पाया है। पंरतु हमारे देश के अधिकांश भागों में हिंदी बोली, पढ़ी या समझी जाती है।

उसके फलस्वरूप भी कंप्यूटर पर अंग्रेजी भाषा में कार्य होता है क्योंकि कंप्यूटर की तकनीक और उसके सॉफ्टवेयरर अधिकाशंतः अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध है। यदि तकनीकी को आम नागरिक तक जन उपयोगी बनाना है तो उसे आमजन की निज भाषा में ही विकसित करना आवश्यक होगा। जिन राष्ट्रों में तकनीकी एवं सॉफ्टवेयर संबंधी विकास कार्य, उनकी ही अपनी भाषा में हुआ है वहीं राष्ट्र आज कहीं ज्यादा सफल और संपन्न है, चीन, जापान इसके उदाहरण है।

कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के लिए कच्चे माल की तरह ही होती है। अतः अधिकाधिक भारतीय भाषाओं का उपयोग किया जाए तो इस क्षेत्र में अधिक आर्थिक उन्नति भी की जा सकती है।

वैसे भी कंप्यूटर के संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास सैद्धांतिक रूप से लिपि या भाषा परक नहीं है वरन् रोमनलिपि (अंग्रेजी) भाषा में जो संभव है वह देवनागरी लिपि (हिंदी भाषा) में संभव या और संभव है। क्योंकि कंप्यूटर सिर्फ बाइनरी 0 और 1 की द्विअंकीय भाषा अर्थात किसी भी भाषा को कंप्यूटर अपने तरीके से समझता है, तो लिहाजा कंप्यूटर पर जो काम अंग्रेजी या किसी अन्य दूसरी भाषा में हो सकता है, वहीं काम हिंदी में भी बखूबी हो सकता है। आवश्यकता तो उसे हिंदी में प्रोग्राम किए जाने की है।

अपितु हिंदी की देवनागरी लिपि में तो कंप्यूटेशनल भाषा में बदलने की अपार संभावनाएं है क्योंकि देवनागरी लिपि में प्र्याप्त 52 वर्ण वैज्ञानिक आधार के साथ उपलब्ध है। वर्तमान समय में अनेकों सॉफ्टवेयर हिंदी भाषा में तैयार हो चुके है जो कि हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। आवश्यकता इस बात है कि सभी विषयों से संबंधित सामग्री को भी यदि कंप्यूटर पर हिंदी भाषा में उपलब्ध करवाया जाए तो इससे विद्यार्थियों को पढ़ने में रूचि भी बढ़ेगी व ज्ञान का प्र्याप्त विकास भी होगा। सभी विषयों से संबंधित ई–सामग्री को इंटरनेट पर स्थापित करने हेतु कार्य करने की जरूरत हैं ताकि इंटरनेट पर हिंदी सामग्री का प्रतिशत बढ़ सके व तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी एक समृद्ध विशाल वट वृक्ष के रूप में परिवर्तित होते हुए विश्व पटल पर पूर्ण रूप से स्थापित हो सके।

अक्सर यहीं तर्क दिया जाता है कि विज्ञान तकनीकी और सभी साहित्येत्तर विषयों की पढ़ाई तो केवल अंग्रेजी में संभव है क्योंकि इन सभी विषयों की पर्याप्त सामग्री का हिंदी में अभाव है। विकिपिडिया पर प्रकाशित एक लेख के अनुसार हिंदी के 3500 लेखक है जो विज्ञान के विभिन्न विषयों पर लिखते है और ऐसी पुस्तकों की संख्या भी 8000 के आसपास है जो विज्ञान व अन्य विषयों पर हिंदी लिखी गयी है। प्रायः देखा जाता है कि सभी अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी मीडियम स्कूलों में इसीलिए भेजते है कि उन्हें लगता है कि जब आगे की पढ़ाई अंग्रेजी में ही करनी है तो बचपन से ही उन्हें अंग्रेजी की आदत क्यों न डाल दी जाए जबकि अभिभावक वास्तविक सत्य से अनभिज्ञ है कि यदि उनके बच्चों में ही मातृभाषा और हिंदी में विज्ञान और गणित जैसे कठिन विषय पढ़ेंगे तो उनकी समझ बढ़ेगी और व जटिल संकल्पनाओं को वे और बेहतर ढंग से समझ पाएंगें।

जब माध्यमिक, उच्च और महाविद्यालयीन स्तर की तकनीकी और विज्ञान की पुस्तकें और पढ़ाई हिंदी में उपलब्ध है तो फिर क्यों न बचपन से ही विद्यार्थियों को मातृभाषा और हिंदी में लिखी गयी विज्ञान व अन्य विषयों की पुस्तकों को पढ़ाया जाएं। माध्यमिक स्तर के बाद विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडिकल और प्रोफेशनल कोर्सज की भाषा हिंदी में होनी चाहिए ताकि हिंदी में पढ़ाई की व्यवस्था हो सके। क्योंकि हिंदी भाषा को सभी अन्य विषयों की भाषा बनाकर रोजगार की भाषा भी बनाना होगा, अभिप्राय यह है कि यदि छात्र सभी विज्ञान प्रौद्योगिकी, तकनीकी वाणिज्य व इंजीनियरिंग विषयों की पढ़ाई हिंदी माध्यम से करें तो भी उन्हें रोजगार के समान अवसरों की प्रप्ति होनी चाहिए। सरकारों को इसके लिए एक व्यवस्था

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

विकसित कर हिंदी को विज्ञान व संचार की भाषा बनाते हुए उसे रोजगारपरक बनने में बढावा देना होगा।

दूसरी व्यवस्था यह है कि महाविद्यालयीन व विश्वविद्यालयीन स्तर की पढ़ाई जो सामान्यतः 4 से 5 वर्षों की होती है उसे घटाकर 2 से 3 वर्षों में किया जाना चाहिए ताकि अंग्रेजी समझने में लगने वाले समय व मेहनत से भी बचा जा सके।

भारत सरकार की राजभाषा हिंदी की नीति को क्रियान्वित करने में भी, इस प्रयास से बढावा मिलेगा। क्योंकि युवापीढी तकनीकी और विज्ञान, प्रौद्योगिकी जैसे विषयों को जब हिंदी में पढेंगी तो उन्हें केन्द्र सरकार के कार्यालयों में रोजगार प्राप्त करने पर, अलग से हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग नहीं लेना पड़ेगा।

तीसरा यह है कि यदि स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर कार्यालयीन हिंदी भाषा को अनिवार्य तौर पर एक विषय के रूप में लागू कर दिया जाए तो राजभाषा हिंदी के प्रशिक्षण और कार्यालय को गति मिलेगी। अक्सर देखा जाता है। कि सरकारी कार्यालयों में भर्ती होने वाले अधिकतर लोग तकनीकी और विज्ञान के विषयों को अंग्रेजी में पढ़कर आते है तो उन्हें अपना कार्य हिंदी में करने में कठिनाई आती है जिसके लिए कर्मचारियों के लिए अलग से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने पड़ते है।

विज्ञान की सभी शाखाओं, तकनीकी, अभियांत्रिकी, पॉलिटेक्नीक, आइटीआइ, सीए, सीएस, सीएमए, कंप्यूटर, आयकर (टैक्स), स्पर्धा परिक्षाओं की तैयारी से संबंधित पुस्तकें, धर्म, विधिशास्त्र, मेडिकल, नर्सिंग, औषध निर्माण (फार्मसी), बी फार्मसी की पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध है। राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में अव्वल स्थान प्राप्त किया जा सकता है। एमएससी (MSc.), आइटी (IT) जैसे कंप्यूटर–कोर्सेस में यदि भाषा संबंधी एक अध्याय जोड़ दिया जाए तो कंप्यूटर में प्रशिक्षण प्राप्त करते समय ही हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर कार्य करने प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

वर्तमान समय में प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर, महाविद्यालयीन, स्नातक, विश्वविद्यालय स्तर की विभिन्न विषयों की पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध है। विज्ञान शाखा से ग्यारहवीं और बाहरहवीं कक्षाओं के बाद बीएस.सी., बी.कॉम, बी.सीए, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, इंजिनियरिंग, नर्सिंग तथा एलएलबी (विधि) की पढ़ाई हिंदी में की जा सकती है। लेकिन इसमें एक समस्या यह हैं कि लोग पहले से ही इन विषयों को अंग्रेजी मे पढ़कर कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों की पढ़ा रहें हैं, उन्हें इन विषयों को पहले हिंदी में पढना होगा तभी वे अपने विद्यालयों का हिंदी में पढ़ा पाऐंगे। इसके लिए डी.एड, बी.एड तथा एम. एड के पाठ्यक्रमों में भी पहले इन विषयों को हिंदी में पढ़ने का प्रयास उपलब्ध कराना होगा। इसके लिए भारत सरकार के उच्चशिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा विभाग द्वारा विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इन सभी परिवर्तनों से हमारे देश की वैज्ञानिक चेतना में जागृति बढेगी और केवल अंग्रेजी के बोझ के नीचे दबे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में भी सहायता मिलेगी।

अर्थशास्त्र में व्यावसायिक, सांख्यिकी, व्यावसायिक अर्थशास्त्र, समाशास्त्र, मनोविज्ञान की पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध है। अर्थशास्त्र, लेखांकण के मूल तत्व, परिणामात्मक अभिरूचि, व्यापारिक विधि, व्यापारिक विधि, नीतिशास्त्र और संरचना,व्यापारिक विधि, नीतिशास्त्र और संचार, अंकेषण इत्यादि पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिन्हें राजस्थान विश्वविद्यालय में समाविष्ट किया गया है।

पॉलिटेक्निक के द्वितिय और तृतीय वर्ष की पुस्तकें: प्रथम वर्ष के लिए बेसिक इलेक्ट्रॉनिक्स, बेसिक इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग, इलेक्ट्रिकल मैनेजमेंट, इलेक्ट्रिकल सर्किट थ्योरी, इलेक्ट्रिकल मशीन, पावर सिस्टम, माइक्रो प्रोसेसर और सी प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रिक वर्कशॉप, स्टेंथ ऑफ मटेरियल, फ्यूयिड मैकेनिक्स एंड मशीन, इंनिजियरिंग मटेरियल एंड प्रोसेसिंग, मशीन ड्राईंग और कंप्यूटर एडेड ड्राफ्टिंग, बेसिक ऑटोमोबाइल इंजिनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इलेक्ट्रॉनिक्स इंजिनियरिंग, थर्मोडायनामिक्स और अंर्तदहन इंजिन, वर्कशॉप टेक्नॉलॉजी और मेट्रोलॉजी, सी प्रोग्रामिंग, बिडिंग टेक्नॉलॉजी, ट्रान्सपोर्ट इंजिनियरिंग, सॉईल फाउंडेशन इंजिनियरिंग, कॉन्क्रिट टेक्नॉलॉजी, बिल्डिंग ड्राईंग इत्यादि।

इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजिनीयरिंग की पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध हैं – बेसिक इलेक्ट्रॉनिक्स, बेसिक इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग, इलेक्ट्रिकल प्रबंधन (मैंनेजमंट) एंड इंस्ट्रूमेंटेशन, इलेक्ट्रिकल सर्किट थ्योरी, इलेक्ट्रिकल मशीन, पावर सिस्टम, माइको प्रोसेसर और सी प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रिक वर्कशॉप, इंटर प्रोन्यूरशिप एंड मैनेजमेंट, प्रशासनिक विधि। इन पुस्तकों के माध्यम से आसनी से इलेक्ट्रिकल इंजिनियरिंग की पढाई पूरी हिंदी भाषा में की जा सकती है।

प्रायः देखा जाता है कि विधि संबंधी पुस्तकें हिंदी में न मिलने के कारण हमारी न्यायव्यवस्था से आवाज उठती है कि हिंदी को न्यायालयों में प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है लेकिन हिंदी में भी एलएलबी की पुस्तकें उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार हैं विधिशास्त्र एवं विधि के सिद्धांत, अपराध विधि, संपति अंतरण अधिनियम एवं सुखाधिकार, कंपनी विधि, अंतर्राष्ट्रीय विधि और मानवाधिकार, श्रम कानून (विधि), प्रशासनिक विधि, आयकर अधिनियम, बीमा विधि इत्यादि जिनकी सहायता से विद्यार्थियों को हिंदी में कानून की पढाई की जा सकती है। इससे आगे चलकर यही लोग न्यायालयों में हिंदी में अपनी बात रख सकते है।

इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान और पशुचिकित्सा जैसे विषयों को हिंदी में पढाने से भी उसका सीधा फायदा पाठकों को होगा क्योंकि यह दोनों विषय देश की मिट्टी से जुड़े हैं।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

कृषि विज्ञान को हिंदी में पढाये जाने से, देश की कृषि व्यवस्था को इसका लाभ ही होगा। जिसकी पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध है।

कंप्यूटर की पढाई में सी–प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स और शॉप प्रक्टिस, सर्किट एनॅलीसिस, इलेक्ट्रॉनिक्स मैंनेजमेंट एंड इंस्ट्रूमेंटेशन, इलेक्ट्रॉनिक डिवाईसेस एवं सर्किटस, डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक्स, वेब प्रोपोगेशन एवं कम्यूनिकेशन इंजिनीयरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स इंस्ट्रूमेंटेशन आदि तकनीकी विषयों का समावेश है।

कुछ विशेष विश्वविद्यालयों के द्वारा किए गए प्रयास जो कि हिंदी में विषयों को बढ़ाने हेतु प्रयासरत है। उदाहरणस्वरूप भारत सरकार के केन्द्रीय विश्वविद्यालय महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय; भोपाल ने ऐसे कुछ पाठ्यक्रमों को हिंदी में पढाने का शुभारंभ भी किया है। जिसमें प्रबंधन, इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, कंप्यूटर साइंस, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, मनोविज्ञान, मीडिया, फिल्म अध्ययन, भौतिकी, गणित, सूचना–प्रौद्योगिकी एवं भाषा–अभियांत्रिकी आदि विषय सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त भाषा संबंधी कुछ पाठ्यक्रमों का भी समावेश हैं, जैसे पी–एच.डी. स्पेनिश, एम.फिल. (कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स), एम.फिल (कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान)। इनसे कई रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते है जैसे कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान के विद्यार्थी देश विदेश के विभिन्न संस्थानों में, विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर एवं शोध अनुषंगी (रिसर्च एसोशिएट) विभिन्न प्रौद्योगिकी संस्थानों जैसे – आई.आई.टी. अथवा विभिन्न शोध संस्थान जैसे सी–डैक अथवा विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों में भाषा संसाधन विशेषज्ञ या कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञानी के रूप में नियुक्ति प्राप्त कर सकते है। देश–विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भी शोध एवं अध्यापन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध है।

इन विश्वविद्यालयों का उद्देश्य ऐसी युवापीढ़ी का निर्माण करना है जो समग्र व्यक्तित्व विकास के साथ अपना रोजगार हिंदी भाषा के कौशल के आधार पर प्राप्त कर सके। ये विश्वविद्यालय ऐसी शैक्षिक व्यवस्था का सृजन करना चाहते है जिसके आधार पर भारत की राजभाषा हिंदी का सर्वोपरि विस्तार व विकास हो। अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय भोपाल द्वारा 18 संकायों में 200 से अधिक पाठ्यक्रमों का हिंदी में निर्माण कर लिया गया है। विश्वविद्यालय में प्रत्येक छात्र को हिंदी भाषा के साथ–साथ एक विदेशी भाषा, एक प्रांतीय भाषा के साथ–साथ संगणक प्रशिक्षण की सुविधा मे अंशकालीन प्रमाणपत्र कार्यक्रम के माध्यम से उपलब्ध है।

यह विश्वविद्यालय भोपाल में चिकित्सा, अभियांत्रिकी, विधि कृषि, प्रंबधक आदि में हिंदी माध्यम से शिक्षण–प्रशिक्षण एवं शोध कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष:– अतः विषयों को हिंदी में पढ़ाया जाए, ऐसी व्यवस्था हो। इस संदर्भ में उपरोक्त सभी सुझाव एवं समाधान 'हिंदी भाषा' में विषयों को पढ़ाने के संबंध में न केवल उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होंगे, अपितु इन सभी सुझावों व समाधानों को यदि व्यावहारिक तौर पर सभी स्तर के विद्यार्थियों चाहे वे विद्यालयीन हो या महाविद्यालयीन तथा विश्वविद्यालयों में लागू करने का प्रयास किया जाए तो निश्चित तौर पर हम अंग्रेजी भाषा की दासता से मुक्त होकर सभी विषयों की पढ़ाई की हिंदी भाषा में करवाने में काफी हद तक सफल हो सकते है और राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रयास में अपना योगदान देकर राष्ट्र की आर्थिक, भौतिक, आध्यात्मिक व नैतिक सभी प्रकार की उन्नति को बढ़ावा देने में भी सहायक बन सकते है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved